भा०कृ०अनु०प० – पूर्वी अनुसंधान परिसर, पटना

दिनांक: 17-07-2026

कृषि परामर्श: झारखंड में एल नीनो के प्रभाव को कम करने हेतु उपाय

भारत मौसम विज्ञान विभाग (IMD), रांची केंद्र के पूर्वानुमान के अनुसार 17 जुलाई से 23 जुलाई 2026 के दौरान झारखंड के अधिकांश क्षेत्रों में हल्की से मध्यम वर्षा के साथ कहीं-कहीं भारी बारिश, आंधी और बिजली गिरने की संभावना है। तापमान सामान्य से थोड़ा कम रहेगा और वातावरण नम रहेगा है। इस परिस्थिति में किसानों को निम्नलिखित उपाय अपनाने की सलाह दी जाती है:

1. फसल प्रबंधन एवं विविधीकरण

• कम अवधि वाली एवं सूखा सहनशील धान की किस्मों जैसे – स्वर्णा श्रेया, स्वर्णा उन्नत, सहभागी, लालट, आईआर 64, नवीन, बिरसा धान-108 का चयन करें।

• ऊपरी भूमि या जल की कमी वाले क्षेत्रों में वैकल्पिक फसलों का चयन करें: सीधी बुवाई वाली धान (Direct Seeded Rice) के साथ अरहर, मक्का एवं मूंगफली को वैकल्पिक फसलों के रूप में अपनाएँ।

- अरहर: बहार, बिरसा अरहर-1, UPAS-120, BR-65, नरेंद्र अरहर-1, IPA-203 (इन्हें खेत की मेड़ों पर भी उगाया जा सकता है)
- मक्का: बिरसा मक्का-1, बिरसा विकास मक्का-1 एवं 2
- रागी (मड़ुआ): बिरसा मड़ुआ-1, बिरसा मड़ुआ-2 बिरसा मड़ुआ-3
- अन्य विकल्प: सोयाबीन, मूंगफली, उड़द, तिल एवं मोटे अनाज (मिलेट्स)

• अंतरवर्तीय खेती अपनाएँ: मक्का + अरहर (2:1), मक्का + लोबिया (1:1), मक्का + उड़द (1:2), अरहर + उड़द (1:2), अरहर + मूंगफली

• समय एवं पानी की बचत हेतु मैट-टाइप (चटाई विधि) या डेपोग नर्सरी तैयार करें।

• विलंबित रोपाई की स्थिति में सामुदायिक नर्सरी स्थापित करें।

• बेहतर अंकुरण हेतु बीज प्राइमिंग (बीजों को रातभर पानी में भिगोना) करें।

• बुवाई से पूर्व बीजों का उपचार करें:

- बाविस्टिन @ 2 ग्राम/किग्रा बीज एवं फिप्रोनिल (रीजेंट) @ 25 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज।
- जैव उर्वरक (PSB) का उपयोग करें

- नर्सरी में दीमक का प्रकोप होने की संभावना है जिसके नियंत्रण के लिए क्लोरपायरीफॉस या फिप्रोनिल को सूखी रेत या मिट्टी के साथ मिलाकर डाले।
- रोपाई से पहले, पौधों की जड़ों को क्लोरपायरीफॉस 20 EC @ 1 मि.ली. प्रति लीटर पानी के घोल में 12–14 घंटे तक डुबोकर रखें। यह उपचार रोपाई के बाद लगभग 30 दिनों तक दीमक एवं अन्य कीटो से सुरक्षा प्रदान करता है।

2. जल प्रबंधन

• खेत की मेड़ों का निर्माण एवं मरम्मत तुरंत करें ताकि जल का रिसाव रोका जा सके।

• वर्षा जल संचयन एवं संरक्षण हेतु मेड़ों की ऊँचाई बढ़ाएँ।

• मल्चिंग एवं अंतःसस्य (interculture) क्रियाओं द्वारा खेत में नमी संरक्षण (In-situ moisture conservation) करें।

3. पोषक तत्व प्रबंधन

• नाइट्रोजन उर्वरक को एक साथ देने के बजाय 3–4 भागों में (स्प्लिट डोज) दें।

• पोषक तत्वों की हानि कम करने हेतु नीम-लेपित यूरिया का प्रयोग करें।

• सूखी मिट्टी में कभी भी यूरिया का प्रयोग न करें।

• वर्षा या सिंचाई के तुरंत बाद अनुशंसित मात्रा का लगभग 75% उर्वरक दें।

4. खरपतवार प्रबंधन

• बुवाई/रोपाई के तुरंत बाद /अंकुरण-पूर्व खरपतवारनाशी का प्रयोग करें:

- पेंडीमेथालिन @ 1.25 किग्रा सक्रिय तत्व/हेक्टेयर
- प्रेटिलाक्लोर @ 0.75 किग्रा सक्रिय तत्व/हेक्टेयर

• अंकुरण के बाद (15–20 दिन बाद) खरपतवार नियंत्रण हेतु:

- बिस्पायरीबैक-सोडियम @ 75 ग्राम सक्रिय तत्व/हेक्टेयर

• जहाँ संभव हो, यांत्रिक निराई के लिए कोनो-वीडर का उपयोग करें।

• खरपतवार नियंत्रण एवं नमी संरक्षण हेतु फसल अवशेषों द्वारा मल्चिंग (पलवार) करें।

• बारिश और तेज हवा के दौरान खेतों में किसी भी तरह की खाद (उर्वरक) या कीटनाशक का छिड़काव बिल्कुल न करें।